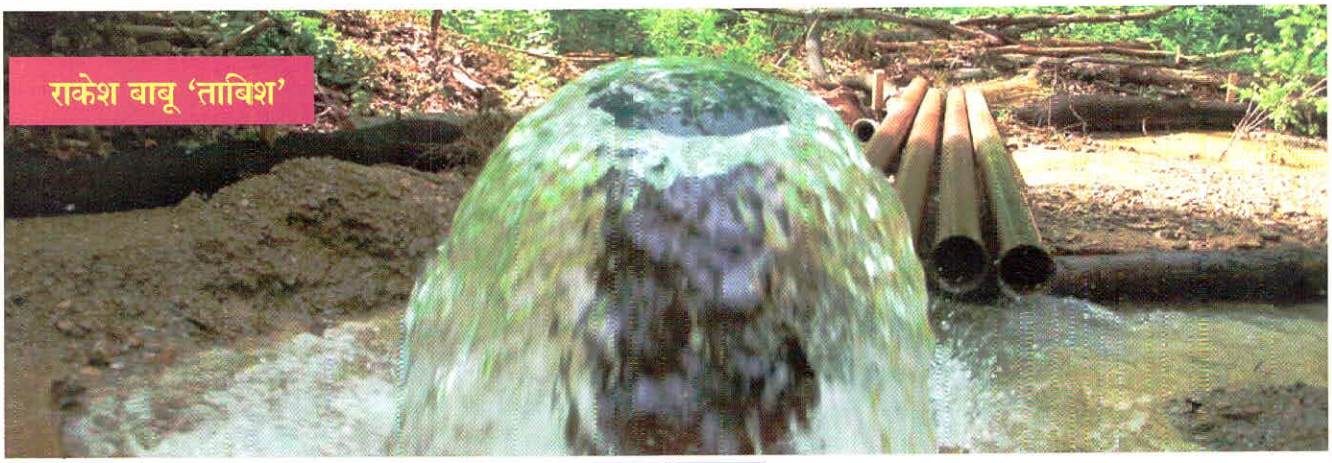

राकेश बाबू 'ताबिश'

जल
जीवन का आधार

'जल' एक ऐसा शब्द है जो जीवन में आदि से अंत तक विद्यमान रहता है। 'जल' शब्द दो स्वरूपों में हमारे सामने आता है : प्रथम तो वह नीर के रूप में और द्वितीय 'जल' अर्थात् आज्ञावाची स्वरूप में जलने की क्रिया। ये दोनों ही स्वरूप जीवन के आदि और अंत से संबंध रखते हैं।

'जल' के नीर स्वरूप के संबंध में जब हम बात करते हैं तो स्पष्ट होता है कि यदि जल नहीं होता तो पृथ्वी पर जीवन की संभावना भी नहीं होती। जल की उत्पत्ति ही जीवन की उत्पत्ति का कारण है। पृथ्वी के प्रादुर्भाव एवं उसके तापीय स्वरूप के शांत होने के बाद हजारों वर्षों के अंतराल के बाद पृथ्वी पर सर्वप्रथम प्राकृतिक रूप से जल की उत्पत्ति हुई। जल के प्रादुर्भाव से वनस्पतियों और प्राणियों की उत्पत्ति हुई। यदि जल का प्रादुर्भाव नहीं होता तो वनस्पतियों और प्राणियों की कल्पना कर पाना संभव नहीं था, जीवन की कल्पना ही असंभव थी। प्रकृति द्वारा प्राणी जगत के निर्माण में जिन तत्वों का उपयोग किया गया है उनमें जल ही प्रधान तत्व है। जल और वायु दो ऐसे तत्व हैं जो प्राणी के शरीर में नित्य प्रति नियमित रूप से संचरित होते रहते हैं। शेष तत्व स्थिर अवस्था में रहते हैं। जल और वायु के निरंतर आवागमन से ही जीवन क्रिया संचालित होती है तथा इनके रुक जाने पर जीवन समाप्त हो जाता है। पृथ्वी, अग्नि और आकाश जो शरीर के शेष स्थिर तत्व हैं वे भी बिखर जाते हैं। अब उस प्राणहीन शरीर को 'जल' के दूसरे स्वरूप (जलने) को समर्पित कर दिया जाता है। जल से उत्पत्ति, जल से जीवन, जल के अभाव में पंच तत्वों का बिखरना तथा अंत में जलने की क्रिया को समर्पित किया जाना यह सिद्ध कर देता है कि जल बिना जीवन संभव नहीं है, जल ही जीवन का मूलाधार है।

धरातल के ऊपर वायुमंडल में, धरातल पर, समुद्र में और धरा के अंतःगर्भ में जितना भी जल उपलब्ध है उसकी कुल मात्रा निश्चित है। वह

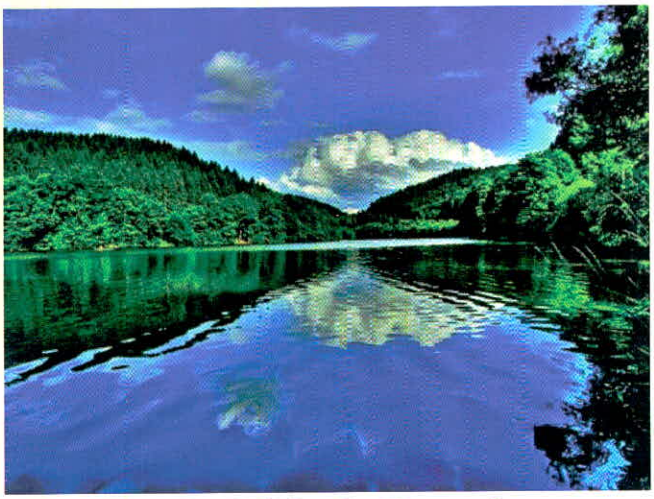

जल की उत्पत्ति ही जीवन की उत्पत्ति का कारण है

न घट सकती है, न बढ़ सकती है, चाहे वह द्रव, ठोस या गैस किसी भी रूप में उपलब्ध हो। वायुमंडल और तापमान के प्रभाव से इनके रूपों में परिवर्तन होता रहता है। रूप परिवर्तन से इनका पारस्परिक अनुपात प्रभावित होता रहता है। निश्चित मात्रा में किसी प्रकार की वृद्धि या अभाव संभव नहीं है। फिर भी चिन्तनीय विषय यह है कि अभाव कहां है? कैसे है? और क्यों है?

समस्त विश्व में उपलब्ध जल का संपूर्ण भाग पेयजल के रूप में उपयोग करने के योग्य नहीं है। संपूर्ण जल का कुछ अंश, जो भू-गर्भ में संचित है अथवा अवसाद रहित वर्षा का वह जल जो पृथ्वी के संपर्क में आने से पूर्व संचित किया गया हो, पीने योग्य होता है। प्राचीन समय में बहता हुआ नदियों का जल भी पीने योग्य था परंतु अब प्रत्येक स्थान पर यह स्थिति नहीं है क्योंकि बढ़ते हुए प्रदूषण के प्रभाव से वायुमंडल के साथ जल सबसे अधिक प्रभावित हुआ

जल और वायु दो ऐसे तत्व हैं जो प्राणी के शरीर में नित्य प्रति नियमित रूप से संचरित होते रहते हैं

है। पेय जल का यह भंडार धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। प्रदूषित जल का औसत बढ़ता जा रहा है। इस असंतुलन को पैदा करने में कुछ संभावित कारण हो सकते हैं, यथा :

• वनों के अधिक कटने से वर्षा का क्रम बदल जाना और वर्षा की मात्रा में अनापेक्षित कमी आ जाना।

• जनसंख्या का अत्यधिक बढ़ता हुआ दबाव, जिससे जल का असीमित दोहन होना।

• भूमि से जल उत्सर्जन कार्य में मशीनी उपयोग से द्रुत गति से दोहन एवं जल की अत्यधिक बर्बादी।

• पेयजल का अत्यधिक दुरुपयोग करने की चिंतन विहीन मानसिकता।

• सरकार, सामाजिक संगठनों एवं जागरूक लोगों द्वारा बार-बार जल संकट के लिए आगाह किए जाने पर भी जन-मानस का लापरवाह होना।

• वर्षा-जल को संचित करने के प्रति संवेदनाओं का अभाव होना।

• भू-जल के पुनर्भरण के प्रति जागरूकता का अभाव होना।

• जल की मितव्ययता की भावना का अभाव होना।

• कृषि कार्य में सर्वाधिक प्रयोग पेयजल का ही होना।

• कृषि कार्यों में प्रयुक्त कीटनाशक एवं उर्वरकों द्वारा पेयजल को प्रदूषित बनाकर पीने योग्य न छोड़ना।

• बहते जल स्रोतों को कल-कारखानों के दूषित जल, गंदे नालों एवं शव विसर्जन से प्रदूषित कर पीने योग्य न छोड़ना।

इसके अतिरिक्त अन्य भी बहुत से ऐसे कारण हो सकते हैं जो पेयजल का अभाव पैदा करने के लिए उत्तरदायी हों। किंतु यदि हम उक्त कारणों का ही निदान कर लें तो समस्या का बहुत अधिक सीमा तक निदान संभव है। हम पानी का मूल्य समझें, मितव्ययी बनें, पानी की बरबादी रोकें, लोगों में जागरूकता लाएं,

यदि जल का प्रादुर्भाव नहीं होता तो वनस्पतियों और प्राणियों की कल्पना कर पाना संभव नहीं था, जीवन की कल्पना ही असंभव थी

असंतुलन को पैदा करने में कुछ संभावित कारण हो सकते हैं, यथा : वनों के अधिक कटने से वर्षा का क्रम बदल जाना और वर्षा की मात्रा में अनापेक्षित कमी आ जाना।

संपूर्ण जल का कुछ अंश, जो भू-गर्भ में संचित है अथवा अवसाद रहित वर्षा का वह जल जो पृथ्वी के संपर्क में आने से पूर्व संचित किया गया हो, पीने योग्य होता है

इसकी सुरक्षा में ही हमारे जीवन की सुरक्षा का रहस्य छुपा हुआ है

सरकार भी अपने दायित्वों को ईमानदारी एवं कड़ाई के साथ निभाए, नदियों का प्रदूषण रोका जाए एवं उनकी सफाई कराई जाए, वर्षा जल के संचय पर सर्वाधिक ध्यान दिया जाए, वर्षा जल संचय के साधन विकसित किए जाएं, ऐसी व्यवस्था की जाए कि बाढ़ और वर्षा का जल बहकर पुनः समुद्र में न पहुंचे अपितु सीधा पृथ्वी के अंदर जा सके ताकि भूगर्भ जल का पुनर्भरण हो सके। इसके लिए संभावित क्षेत्रों को चिन्हित करते हुए बड़े-बड़े जालीदार बोर करा के पानी को भूगर्भ में पहुंचाया जाए, प्रदूषित जल का शोधन करने के साधन जुटाए जाएं, ऐसे बड़े तालाबों को विकसित किया जाए, जिनमें वर्षा और बाढ़ के जल को संचित कर सिंचाई में उपयोग किया जा सके।

यदि हम जल समस्या के प्रति जागरूक हैं और उसी के अनुरूप व्यवहार का आचरण करते हैं तो कुछ सीमा तक जीवन के इस अमूल्य आधार को सुरक्षित रख पाएंगे क्योंकि इसकी सुरक्षा में ही हमारे जीवन की सुरक्षा का रहस्य छुपा हुआ है। अन्यथा की स्थिति में संकट ही संकट है जो हमारे प्राणों को भी संकट में डाल सकता है। अतः हमको जागना ही होगा।

संपर्क करें :
आचार्य राकेश बाबू 'ताबिश'
नि. द्वारिकापुरी कोटला रोड़,
मंडी समिति के सामने,
फीरोज़ाबाद-283 203
(उत्तर प्रदेश)

वर्षा और धरती

नन्हीं-नन्हीं बूंदें
आसमां से परी सदृश उतरती
लगती जैसे पानी के बीज
धरती भी उसको पाकर
कृतार्थ हो हर्षित होती
गायब होती उसकी खीझ।
कोई गर धरती से प्रश्न करे
वह सबसे अधिक
किसको स्मरण करती
सच कहता हूं ताल ठोक
उसका उत्तर मुझे ज्ञात
वह हरदम पानी-पानी कहती।
हकीकत यह है कि
जल से भरपूर होकर ही
वह बनती है धरती माता।
उसका वह स्नेहिल

और ममतामयी स्वरूप
भला कैसे नहीं भाता?
वर्षा की प्रारंभिक बूंदों से
पुलकित हो बरबस
झूम उठ वह करती नृत्य।
वर्षा बिन वह अधूरी
और अपूर्ण उसके बिन वर्षा
बात यह सोलहों आने सत्य।

बूंद नहीं बरबाद हो

घर-घर यह आंदोलन गूंजे,
घर-घर में यह नाद हो।
ऐसा जतन करें पानी की,
बूंद नहीं बरबाद हो।।

एक तरफ बढ़ती आबादी,
खर्चा पानी का भारी।
दूजे पानी की बर्बादी,
करते सारे नर-नारी।।
हालत रही यही तो आगे,
समय बहुत नाशाद हो....

पीने के पानी की किल्लत,
रात-दिन बढ़ती जाती।
बढ़ती हुई मुसीबत हमको,
क्यों नहीं नजर आती।।
फूंक-फूंक कर कदम रखो,
सबकी तबियत आबाद हो.....

सूख रहे सब स्रोत धरा के,
इस पर तनिक विचार करो।
फिर से हो भूगर्भ जलमई,
कुछ ऐसा उपचार करो।।
दोहन कुछ कम करो धरा का,
संकट बिना विवाद हो.....

पीने के पानी का सेवन,
अन्य कार्य में मत करिए।
वर्षा के जल का कर संचय,
शेष कार्य उससे करिए।।
बात न हो झगड़े की 'ताबिश',
प्यार भरा संवाद हो.....

संपर्क करें :
आचार्य राकेश बाबू 'ताबिश'
नि. द्वारिकापुरी कोटला रोड़, मंडी समिति
के सामने, फीरोज़ाबाद-283 203
(उत्तर प्रदेश)